IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, July 2025
Impact Factor: 7.67

गोवा आन्दोलन में विन्ध्य प्रदेश के सत्याग्रहियों की महत्वपूर्ण भूमिका

डॉ. (श्रीमती) पूनम मिश्रा[1], उदित नारायण रवि[2]

[1]प्राध्यापक इतिहास विभाग, शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)

[2]शोधार्थी, शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश :–

हिन्दुस्तान की आजादी के बाद भी देश का एक टुकड़ा था, जो पुर्तगाल की गुलामी भोग रहा था। एक टुकड़ा था– गोवा। यह अपमान जनक कष्ट केवल गोवा–वासियों को ही नहीं अपितु देश के हजारों लाखों सेनानियों देश भक्तों और बुद्धिजीवियों को भी खलता था। खासकर के समाजवादी था इस बावत् ज्यादा ही चिंता करते थे। इस शोध आलेख में उपयुक्त बिन्दुओं को समाहित करने का एक अभिनव प्रयास है।

मुख्य शब्द :– गोवा, आन्दोलन, विन्ध्य, प्रदेश, सत्याग्रहियों, महत्वपूर्ण, भूमिका आदि।

प्रस्तावना :–

गोवा मुक्ति का आनदोलन इसतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि गोवा की आजादी की लड़ाई में गोवा ही नहीं बाहर से आये हुए लोगों ने भी हिस्सेदारी की। बालखण्ड जो कि गोवा से दूर था आजादी की लड़ाई में स्वयं को अछूता न रख सका। बघेलखण्ड के समाजवादी नौजवानों ने अपने प्राणों का मोह किये बिना इस संग्राम में कूद कर उल्लेखनीय योगदान दिया।

1947 के आन्दोलन को गति देने के प्रखर समाजवादी चिंतक और नेता डॉ. राम मनोहर लोहिया गोवा गये, उसके बाद लोक नायक जय प्रकाश दोनों नेताओं को पुर्तगाली सरकार ने गिरफतार करके अमानुषिक अचार करना शुरू किया। उनके वर्फ की सिल्लियों में कई–कई दिनों तक विठाया। उसी से क्षुब्ध होकर गांधी जी ने वक्तव्य दिया कि यदि लोहिया और जय प्रकाश को रिहा नहीं किया गया तो 40 करोड़ लोगों के लिये जेल के दरवायें खोलने पड़ेंगे।

1947 में हिन्दुस्तान आजाद हो गया। तब केन्द्रीय सरकार की जिम्मेदारी बनती थी कि वह गोवा को भी पुर्तगालियों से मुक्त करायें। लेकिन जवाहरलाल ने की ढुल–मूल नीति और हीला–हवाली के चलते समाजवादियों ने इस आन्दोलन को अपने हाथों में ले लिया। आन्दोलनकारियों के शीर्ष नेता जहिर अब्बारिस गोवा के ही थे। पुर्तगाली सरकार खौफ खाती थी। उन पर सरकार ने 20 लाख रुपये का इनाम की घोषणा कर रखा था। उसी समय समाजवादी नेता एन0जी० गोरे ने अकेले ही गोवा आन्दोलन करने का प्रयास किया। गोवा के सेनिकों ने उन्हें गिरफतार कर लिया। बाद में उन पर मुकदमा चला और 10 वर्ष की सजा सुनाई गयी। इसके बाद ही लोहिया जी के करीबी मुथुलिमिये एक जत्थे के साथ गोवा पहुंचे, यहाँ सैनिकों ने मारपीट की। घटना के बाद अफवाह फैल गया कि मुथुलिमिये को मार डाला गया है। ताकि बाद में यह कर गलत निकली।

आजादी की आठवें सालगिरह अर्थात् 15 अगस्त 1955 को निर्णय लिया गया कि सामूहिक रूप से पूर्व देश से सत्याग्राहियों का जत्था गोवा पहुंचे। इस निर्णय के चलते ही बघेलखण्ड के लड़ाकू समाजवादी नेताओं ने भी टोला बनाकर गोवा पहुंचने का निश्चय किया। 18 सत्याग्रहियों को इस टोली के नेता समाजवादी यमुना प्रसाद शास्त्री रीवा थे। टोली में शामिल अन्य सदस्य सर्वश्री चन्द्रप्रताप सिंह तिवारी सीधी, जनार्दन प्रसाद शुक्ल हर्दी, अवधराज सिंह बरांव, बाबूलाल चौहान उपरहटी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

रीवा, यज्ञदत्त शर्मा मौनी, शिव बिहारी मिश्र कटरा, रामभजन बैगा सीधी, सूरज प्रसाद गौतम सतना, सीताराम नेपाली सतना, जागेश्वर प्रसाद भैया बहादुर सिंह नकेला, शीलकुमार निगम, लक्ष्मी नारायण नायक टीकमगढ़, विक्रम सिंह यादव, पृथ्वीराज विश्वकर्मा, श्रीमान् भार्गव छतरपुर, रामलखन सिंह मऊगंज थे।

11 अगस्त को रीवा से सत्याग्राहियों ने प्रस्थान क्या। 12 अगस्त को सतना पहुँचने पर सपना के नागरिकों ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया हाबड़ा बाम्बे मेल से सथ्याग्रही शाम को मेल से रवाना हुये और 13 अगस्त को पूना सुबह 4 बजे पहुँच गये। इन दिनों समूचे देख से सत्याग्रही ट्रेनों में भर–भर कर गोवा जा रहे थे। जगह–जगह गोवा मुक्ति के नारे गूँज रहे थे।

"बागी बनिया की ललकार, गोवा छोड़े साला जार ।
विन्ध्य प्रदेश की टोली लगाती थी"
विन्ध्य प्रदेश के नौजवान जायेंगे, गोवा आजाद करायेंगे ।"

महाराष्ट्र के जिस भी जिले से ट्रेन गुजराती स्थाानीय नागरिक दिल को खोलकर इन सत्याग्रहियों का स्वागत कर उत्साह बढ़ाते थे। जहां पर यह उल्लेख करना जरूरी है कि महाराष्ट्र के तत्कालिक मुख्यमंत्री मोरारजी के भाई देसाई इस आन्दोलन से सहमत नहीं थे, उनका तर्क था कि यह काम केन्द्रीय सरकार का है न कि आम नागरिकों का। यही कारण था कि उन्होंने सत्याग्रहियों को इस गोवा जाने पर रोक लगा दिया किन्तु समाजवादी नेता एस.एम. जोशी के सहयोग से किसी तरह सत्याग्रही गोवा पहुंच ही गये।

बघेलखण्ड के सत्याग्राही सालेली नामक स्थान से पैदल चले। ऐसे ही कुछ आगे बऐ होंगे किसी सामने एक नाला था जिसके दूसरी तरफ बंदूकधारी पुर्तगाली सैनिक सत्याग्रहियों का रास्ता रोके खड़े थे। सत्याग्रहियों ने निर्णय होकर बढ़ना शुरू किया तभी पीछे से गोलियां चली शुरू हो गयी और चार लोग गोलियों से घायल हो गये। सत्याग्राही में से अधिकांश इधर–उधर घुस गये, बन का बैगा और शाी तथा पंजाब के कुछ लजोग बच–बचाकर आगे बएते गये। आखिरकार सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया अैर गिरफ्तार कर 3 किलोमीटर दूर माण्डली नदी के पास ले गये जहां नाव में कुछ लोग अधिकारी बैठे हुये थे। उन्होंने सत्याग्राहियों के हाथ से झंडा छुड़ा लिया और पीटना शुरू कर दिया। बंदूक के कुंदों से जानवरों की तरह इन्हें पीटा गया। इसी मारपीट में एक सत्याग्राही यमुना प्रसाद शास्त्री की दांयी आंख से खून उतर आया। श्री शास्त्री की हालत गम्भीर देखकर उन्हें सावंतवाड़ी अस्पताल लाया गया लेकिन वहां चिकित्सा की सुविधा नहीं थी। फलतः उन्हें बेलगांव ले जाया गय॥

इस प्रकार से निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लगभग 2 माह तक बघेलखण्ड के स्वतंत्रता सेनानी गोवा मुक्ति के लिए आन्दोलन करते रहे। देशभर से गोवा पहुँचे सत्याग्राहियों के बघेलखण्ड की इस टोली ने जो ख्याति अर्जित की उसकी भूमिका ऐतिहासिक रही है।

संदर्भ स्रोत :–

1. आर. एन. श्रीवास्तव, गोवा मुक्ति संग्राम में म.प्र. का योगदान (अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, वि.वि. अनुदान आयोग, भोपाल, पृ. 32)

2. नई दुनिया 19 अगस्त 1955, सप्रे संग्रहालय, भोपाल

3. Shri J.S. Tilak, Secratary, Goa Liberatin aid Committee, keshri Office Pune के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, July 2025
Impact Factor: 7.67

4. मध्यप्रदेश शासन सामान्य प्रशासन विभाग, मंत्रालय, बल्लभभवन भोपाल क्र. एफ. 14-6/96/13 दिनांक 18.04.2000

5. साक्षात्कार- श्री सूर्यप्रताप गौतम, गोवा सत्याग्रही, सतना (साक्षात्कार श्री उदित नारायण रवि, शोधकर्ता, द्वारा)

6. .श्री जे. एस. तिलक, सचिव, गोवा विमोचन समिति पुणे का सूची पत्र